2020 धन्यवादज्ञापन सम्मेलन के मुख्य शब्द

मसीह जो एक नया मनुष्य के लिए हमारी परम्परा को खुद से बदलता है वह सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, परमेश्वर के गृह प्रबंध की केन्द्रियता और सर्वभौमिकता है।

जब हमारे पास सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह का दर्शन होता है, उसे अपने जीवन और अपने पूरे अस्तित्व के गठन के रूप में अनुभव करते हैं, और अपनी परम्परा के बजाय उसे जीते हैं, तो नया मनुष्य व्यवहारिकता में हमारे बीच दिखेगा और हम एक नया मनुष्य के जीवन को एहसास करेंगे।

हमें अपनी परम्परा को बदलने के लिए और नये यरूशलेम जैसा नया बनने के द्वारा व्यवहारिकता में नया मनुष्य बनने के लिए पुनरुत्थान जीवन की ताज़ी आपूर्ति से दिन प्रतिदिन नये होने की जरूरत है।

हमें यीशु में सत्य है के रूप में मसीह को सीखने के द्वारा अपनी परम्परा के बजाय एक नया मनुष्य को जीने की जरूरत है; जिस तरह प्रभ यीशु पृथ्वी पर जीयें उसी तरह आज नया मनुष्य को जीना चाहिए।

© 2020 Living Stream Ministry

धन्यवादज्ञापन सम्मेलन के संदेशों की रूपरेखा

नवम्बर 26-29, 2020

समान्य विषय:

सर्व-सम्मिलत, विस्तृत मसीह का एक नया मनुष्य के लिए परम्परा को बदलना

संदेश एक

हमारी परम्परा का सर्व-सम्मिलित, व्यापक मसीह, द्वारा बदले जाने की अत्यावश्यकता

शास्त्र अध्ययन: कुलु. 1:12-13, 15-18, 27; 2:8, 14-15; 3:4, 10-11

I. **कुलुस्से की पुस्तक इसलिए लिखि गयी थी क्योंकि कुलुस्से में कलीसिया परम्परा से व्याप्त थी और संत परम्परा द्वारा मसीह से भटकाये गये थें-2:8; 16-17; 3:10-11:**

A. कुलुस्से में परम्परा कलीसिया में सैलाब की तरह आ गया था, मसीह को प्रतिस्थापित किया और संतों को लूट की तरह बहा ले गया-2:8

B. परमेश्वर का शत्रु मसीह को बदलने के लिए परम्परा का इस्तेमाल करता है; वह मसीह को बदलने के लिए परम्परा के अच्छे पहलुओं का इस्तेमाल करेगा-फिलि. 3:4-8

C. कुलुस्सियों की पुस्तक के अनुसार, मसीह परम्परा द्वारा बदला गया है, कुलुस्सियों सूचित करता है कि मसीह के लिए चरम प्रतिस्थापन हमारी परम्परा है।

D. कुलुस्सियों में *अंधकार का साम्राज्य* खासकर परम्परा के अच्छे पहलुओं को और हमारे स्वभाविक जीव को संदर्भित करता है-1:12-13:

1. कुलुस्से में संत परम्परा के उच्चतम पहलुओं को कलीसिया पर हमला करने की अनुमति देकर अंधकार के साम्राज्य के तहत आ गये-2:8

2. परम्परा के सर्वोच्च उत्पाद अंधकार के साम्राज्य के पहलू हैं जिसके द्वारा शैतान लोगों को नियंत्रित करता है-1:13

3. कुछ भी जो मसीह के स्थान पर रखा जाता है वह हमें नियंत्रित करने के लिए अंधकार का साम्राज्य बन जाता है-आ. 13

II. **मानवीय परम्परा मनुष्य के पतन के बाद शुरू हुई-उत्प. 4:16-22:**

A. परमेश्वर की उपस्थिति को छोड़ने के बाद, कैन ने अपनी सुरक्षा और आत्म अस्तित्व के लिए शहर बनायी-आ. 16-17:

1. इस शहर के अंदर उसने परमेश्वर के बिना एक परम्परा, परमेश्वर रहित परम्परा बनायी।

2. वाटिका में परमेश्वर मनुष्य के लिए सबकुछ था-उसकी सुरक्षा, रखरखाव, आपूर्ति और मनोरंजन; जब मनुष्य ने परमेश्वर को खो दिया, उसने सबकुछ खो दिया।

3. मनुष्य का परमेश्वर को खो देना, ने मनुष्य को मानवीय परम्परा का अविष्कार करने पर मजबूर कर दिया, जिसक मुख्य तत्व थें अस्तित्व के लिए शहरें, जीविका चलाने के लिए पशु पालन, आनंद के लिए संगीत, और बचाव के लिए हथियारें थीं-आ. 20-22

B. देखने में, मनुष्य द्वारा एक परम्परा बिना परमेश्वर के अविष्कार किया गया था जिन्होंने परमेश्वर के मार्ग पर जाने से इन्कार किया और इस प्रकार परमेश्वर को खो दिया; वास्तव में, परम्परा का आंतरिक कारक परमेश्वर

का दुश्मन, शैतान का उकसाना और भड़काना था, जो मनुष्य के अंदर है, जो परमेश्वर से दूर चले गये–आ. 7, 16–17; मत्ती 12:26:

1. ऐसी परम्परा, जो परमेश्वर के बगैर थी और शैतान से जुड़ी थी, युगों से सभी मानवीय परम्पराओं का आदर्श प्रतिनिधि बन गयी और सूचित करती है कि परम्पराएं परमेश्वर के बगैर हैं और शैतान का अनुसरण करती हैं और शैतान से जुड़ी हैं–लूका 4:6

2. परमेश्वर रहित परम्परा उत्पत्ति 4 में बीज के जैसे शुरू हुई और यह मानव जाति के सम्पूर्ण इतिहास में विकसित होगी जबतक ये प्रकाशितवाक्य 18 में महान बेबिलोन में समाप्त न हो जाये।

3. मत्ती 24:37–39 में प्रभु का वचन प्रकट करता है कि नूह के समय पर परमेश्वर रहित परम्परा प्रभु के आगमनकाल में अपने चरम विकास पर होगी।

III. **परम्परा मसीह और कलीसिया संबंधित परमेश्वर के उद्देश्य के लिए बाधा है–इफि. 3:10–11; 5:32:**

A. कभी कभी बहुत धूर्त जन मसीह और कलीसिया के मार्ग पर खड़ा हो जाता है; यह धूर्त तत्व परम्परा है–कुलु. 3:10–11; इफि. 2:14–15; कुलु. 2:14–15

B. परम्परा मसीह को अनुभव करने में आने वाली बड़ी बाधा है; जाने अनजाने, हम मसीह के अनुभव और आनंद से परम्परा के द्वारा बाधित किये जाते हैं–फिलि. 3:7–8

C. हमारा सब बातों में मसीह में बढ़ना और पूरे डील डौल तक बढ़ना हमारी धूर्त, छुपी परम्परा से बाधित होता है–कुलु. 2:19; इफि. 4:13ख 15–16

IV. **मानवीय संस्कृति परमेश्वर के राज्य के खिलाफ खड़ी है–मत्ती 10:16–25, 34–39; 12:29, 46–50:**

A. पापमय चीज़े परमेश्वर के राज्य का उतना विरोध नहीं करती जितना मानवीय परम्परा करती है।

B. मानवीय परम्परा शैतान के राज्य का मूल भाग और सबसे बड़ा भाग बन गया है–आ. 26

C. परम्परा शैतान का गढ़ बन गया है; चालाकी से वह परम्परा पर पकड़ बनाये रखता है और इसका इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य का विरोध करने में करता है–प्रेरितों 26:18; कुलु. 1:12–13

V. **मसीह सर्वसम्मिलित व्यापक व्यक्ति के रूप में परम्परा के विरोध में है और उसे खुद से हमारी परम्परा को बदलना चाहिए–आ. 18; 3:4, 10–11:**

A. कुलुस्सीयों की पुस्तक में मसीह के व्यापक प्रकाशन का उद्देश्य परम्परा के साथ निपटना है–2:8; 3:10–11

B. इस पुस्तक में पौलुस सर्व सम्मिलित, व्यापक मसीह के एक दर्शन को प्रस्तुत करता है, हमें इस तथ्य से प्रभावित करने के लिए कि इस मसीह को हमारी परम्परा का स्थान लेने चाहिए–1:27

VI. **जिस प्रकार का मसीह परम्परा का स्थान लेता है वह सर्व सम्मिलित, व्यापक मसीह है, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति है, परमेश्वर के गृह प्रबंध की केन्द्रीयत और सार्विकता है–आ. 15–18; 2:16–17; 3:4, 10–11:**

A. मसीह जो हमारी परम्परा का स्थान ले सकता है और हमारा सबकुछ बन सकता है वह सर्व–सम्मिलित, व्यापक मसीह है–1:15, 18

B. कुलुस्सियों की पुस्तक सर्व–सम्मिलित, व्यापक मसीह को प्रकट करने के लिए लिखि गयी थी जो हमारी परम्परा से निपटता है और हमारी परम्परा को खुद से बदलता है–3:4, 10–11

C. अपने उद्धार में परमेश्वर न केवल हमें पाप, न्याय, आग की झील, संसार और स्वयं से बचाता है, वह हमें हमारी परम्परा समेत सबकुछ से बचाता है जो मसीह का स्थान लेती है–इब्रा. 7:25

D. सर्व–सम्मिलित, व्यापक मसीह हम में है, और हमें उसे हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व को भरने और हमारी परम्परा को खुद से बदलने की अनुमति देने की जरूरत है–इफि. 3:17; कुलु. 1:27; 3:11

© 2020 Living Stream Ministry